15

''कृपया मुझे गलत न समझें!''

(3:27-31)

पचास से अधिक वर्षों से मैं बोल कर और लिख कर सुसमाचार के इन वचनों को लोगों तक पहुंचाने की कोशिश कर रहा हूं, और कई बार तो निराश सा हो जाता हूं। यह कहना कठिन है कि मैं क्या कहना चाहता हूं क्योंकि मेरी हर बात के कई अर्थ हो सकते हैं। इसके अलावा लोग आमतौर पर ध्यान से सुनते (या पढ़ते) नहीं हैं, और कुछ लोगों की ''स्मरण शक्ति बड़ी तेज़'' होती है। मैंने लोगों को कहते सुना है कि उन्हें मेरा कहा ''याद'' था, परन्तु उनकी बात मेरी कही बात से बहुत कम मेल खाती थी।

पौलुस को मालूम था कि गलत समझे जाने और गलत ढंग से पेश किए जाने का अर्थ क्या है (देखें 3:8)। उसने कई बार अपनी सफ़ाई के लिए या यह समझाने के लिए कि उसके कहने का क्या अर्थ था या क्या नहीं था, कई बार लिखना रोक दिया। हम एक व्याख्यात्मक वचन रोमियों 3:27-31 में आ चुके हैं। पौलुस ने धार्मिकता के विषय का परिचय बड़ा विरोध उत्पादक दिया था। उसने ज़ोर दिया था कि धर्मी ठहराया जाना विश्वास के द्वारा है (3:22, 25, 26) और अब वह विश्वास के महत्व पर और चर्चा के लिए तैयार था (अध्याय 4)। परन्तु चर्चा आरम्भ करने से पहले वह अपनी अभी-अभी कही बात के तीन मुद्दों को स्पष्ट करने के लिए रुक गया।

3:27-31 में पौलुस की टिप्पणियों की सामान्य प्रासंगिकता है, परन्तु वे विशेषकर यहूदियों के लिए लिखी गई थीं। वह इस बात को समझता था कि विश्वास से धर्मी ठहराए जाने की उसकी शिक्षा के सबसे बड़े विरोधी यहूदी ही होंगे। वह इस बात से भी परिचित था कि यदि उसे कोई गलत समझेगा या उसे गलत पेश करेगा तो वे यहूदी ही होंगे। पूरे पत्र में उसने अपने जाति-भाइयों की ओर विशेष ध्यान दिया।

मैं अपने पाठ का नाम ''कृपया, मुझे गलत न समझें!'' रख रहा हूं। वचन में दिए गए मुद्दों का अध्ययन करते हुए मैं उस बात पर ज़ोर देना चाहता हूं जो पौलुस ने *कही* और जो उसने *नहीं* कही।

''मैं कह रहा हूं कि धर्मी ठहराया जाना विश्वास के द्वारा होता है जिसमें घमण्ड की कोई बात नहीं'' (3:27, 28)

जो पौलुस ने कहा

अध्याय 3 का आरम्भ प्रश्न-उत्तर के रूप में होता है। आयत 27 में पौलुस उस रूप में वापस आता है: ''तो घमण्ड करना कहां रहा? उस की तो जगह ही नहीं: कौन सी व्यवस्था के कारण से? क्या कर्मों की व्यवस्था से? नहीं, वरन विश्वास की व्यवस्था के कारण। इसलिए हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं, कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है''

(आयतें 27, 28)। पहली बात जो पौलुस स्पष्ट करना चाहता था वह यह थी कि विश्वास से धर्मी ठहराए जाने की शिक्षा व्यक्तिगत प्राप्तियों पर घमण्ड करने के लिए कोई जगह नहीं रह गई थी।

''घमण्ड'' का अनुवाद *kauchesis* से किया गया है, जिसका अर्थ ''घमण्ड करने का काम'' है। शब्दकोष में ''घमण्ड'' की परिभाषा इस प्रकार है: ''बातें करने में अपनी महिमा करना; ... बढ़ा-चढ़ाकर घमण्ड से बात करना।''[1] घमण्ड करने में आम तौर पर अपनी प्राप्तियों, खूबियों या सम्पत्तियों पर गर्व करना आता है। यूहन्ना ने ''जो कुछ संसार में है'' उसके विषय में लिखते हुए ''जीविका का घमण्ड'' भी जोड़ा (1 यूहन्ना 2:16)। पीटरसन ने 1 यूहन्ना 2:16 वाले ''जीविका का घमण्ड'' का अर्थ ''महत्वपूर्ण दिखने की इच्छा'' के रूप में किया (MSG)।

जब किसी को यह लगता है कि उसने किसी महत्वपूर्ण काम में भाग लिया है तो घमण्ड करना या शेखी मारना ''स्वाभाविक'' बात है। रोमियों 2:17 और 2:23 हमें बताता है कि यहूदी लोग परमेश्वर में और व्यवस्था में घमण्ड करते थे। यानी वे यह घमण्ड करते थे कि वे परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं और उन्हें और केवल उन्हीं को मूसा की व्यवस्था दी गई थी। इसका अर्थ यह नहीं है कि घमण्ड करना यहूदियों में ही पाया जाता था। अलग अलग यूनानी शब्दों का इस्तेमाल किया गया है, परन्तु अध्याय 1 में जब पौलुस ने अन्यजातियों को ''डींग मार'' और ''घमण्डी'' कहा तो उसने इसी विचार को बताया था (आयत 30)। बेशक हम ऐसे शब्दों का इस्तेमाल पौलुस के बहुत पहले हुए पाठकों के लिए ही नहीं कर सकते। *हमारे* लिए किसी से अपने आपको श्रेष्ठ अनुभव करना जो ''उतना अच्छा नहीं है जितने हम हैं'' या जिसके नैतिक मापदण्ड उतने ऊंचे नहीं हैं जितने हमारे, कितना आसान है! कितनी ही बार हम गर्व से कई बार तो घमण्ड से अपने भले कामों का कबाड़ा कर देते हैं!

''घमण्ड करना'' के बारे में पौलुस ने ज़ोर दिया कि यह ''कहां रहा'' (आयत 27क)। ''कहां रहा'' का अनुवाद मिश्रित शब्द *ekkleio* से किया गया है, जिसका अर्थ है ''बाहर रखना।'' किसी घुसपैठिए को बाहर रखने के लिए दरवाज़ा जोर से बन्द करने की कल्पना करें। कृदंत (भूत) काल का इस्तेमाल किया गया है। इन शब्दों का अर्थ है कि ''हमेशा-हमेशा के लिए, घमण्ड करने को निकाल दिया गया है।''[2]

किस आधार पर घमण्ड करने को निकाला गया है। व्यवस्था के ''कामों के'' आधार पर (आयत 27क)? बेशक नहीं। कोई भी डॉक्ट्रिन जो यह सिखाती है कि लोगों का उद्धार उनके कामों के आधार पर होता है, घमण्ड करने को *हतो*त्साहित करने के बजाय *प्रो*त्साहित करने का काम करती है। आत्मसंतुष्टि आत्म प्रशंसा का कारण बनती है, जो आत्म आनंद के प्रदर्शन का कारण बनती है।[3] जिम मैक्गुइगन ने लिखा है कि ''कामों की व्यवस्था'' जो भी हो यदि वह करुणा के बजाय गुणों पर ज़ोर देती है तो वह पूरा होने के बजाय व्यर्थ और आश्रय की जगह क्रोध लाती है।[4]

घमण्ड करना निकाल दिया जाता है क्योंकि हमारा उद्धार कामों के आधार पर नहीं, बल्कि विश्वास के आधार पर होता है (आयत 27ग) यानी उस पर नहीं जो हम ने किया है, बल्कि उस पर जो हमारे लिए परमेश्वर ने किया है। फिलिप्स के अनुवाद में ''पूरा मामला अब अलग जहाज़ पर है यानी प्राप्ति के बजाय प्रतीति करने पर'' है।

कामों के आधार पर उद्धार का अर्थ *नीचे से* (हमारे अपने प्रयासों से) उद्धार पाने की इच्छा

करना है, जबकि विश्वास के आधार पर उद्धार *ऊपर से* (परमेश्वर की ओर से) उद्धार पाने की इच्छा करना है।[5] कामों से उद्धार आत्मकेन्द्रित है, जबकि विश्वास से उद्धार परमेश्वर पर केन्द्रित है। यदि कोई एक डूब रहे व्यक्ति को बचा ले तो क्या वह उस पर *जो उसने* किया है शेखी मारेगा कि उसे अपने बचाने वाले पर इतना विश्वास था?[6] नहीं, तारीफ़ के उसके शब्द उसके लिए होंगे जिसने उसे बचाया।

अपनी चर्चा को आगे बढ़ाते हुए पौलुस ने फिर उसी बात पर ज़ोर दिया जो उसने 21 से 26 आयतों में बताई: ''इसलिए हम[7] इस परिणाम पर पहुंचते हैं,[8] कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता ['परमेश्वर के साथ सही किया जाता'; NCV] है'' (आयत 28)। ''से अलग ही'' *choris* का अनुवाद है जिसका अर्थ है ''से अलग'' या ''बिना''[9] है। AB में ''से स्वतन्त्र और बिल्कुल अलग'' है।

यूनानी धर्मशास्त्र में आयत 28 में केवल ''व्यवस्था के कामों के बिना''[10] जिसमें अंग्रेज़ी की तरह law से पहले कोई निश्चित उपपद नहीं है, परन्तु संदर्भ से यह स्पष्ट है कि पौलुस के मन में मुख्यतया मूसा की व्यवस्था ही थी। परन्तु यहां फिर एक सामान्य नियम लागू होता है: हमारा उद्धार *किसी* व्यवस्था को मानने से नहीं हो सकता, क्योंकि हम किसी भी व्यवस्था को पूरी तरह से कभी नहीं मान सकते।

27 और 28 आयतों में पौलुस की बात स्पष्ट है कि अनुग्रह से उद्धार व्यक्तिगत प्राप्ति पर घमण्ड करने की कोई जगह नहीं रहने देता। पहले उसने इफिसुस के मसीही लोगों को लिखा था, ''क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यही तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे'' (इफिसियों 2:8, 9)। कुरिन्थियों को लिखते हुए उसने कहा, ''जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करे'' (1 कुरिन्थियों 1:31)। गलातियों को उसने कहा, ''पर ऐसा न हो कि मैं किसी अन्य बात पर घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का'' (गलातियों 6:14क; देखें फिलिप्पियों 3:3)।

ड्वाइट मूडी ने एक बार कहा था, कि वह कितना आनन्दित है कि घमण्ड करना निकाल दिया गया है:

> यदि कोई मनुष्य स्वर्ग में जाने का मार्ग बना सकता, तो आपको इसका अन्त कभी न मिलता। यदि कोई व्यक्ति दूसरों से थोड़ा आगे बढ़कर कुछ हज़ार डॉलर कमा लेता है तो आप उसे अपने ऊपर घमण्ड करते हुए सुनेंगे। मैंने ऐसी बातें इसलिए अधिक सुनी है कि अब मैं उनसे उकता गया हूं। मुझे खुशी है कि पूरे सनातनकाल तक हम किसी को यह घमण्ड करते हुए नहीं सुनेंगे कि वह वहां कैसे पहुंचा![11]

जैसा कि पहले कहा गया था, 27 और 28 आयतों में पौलुस का अर्थ स्पष्ट था और इस पर आम सहमति पाई जाती है। परन्तु पौलुस की शब्दावली पर कुछ असहमति पैदा होती है। उदाहरण के लिए आयत 27 में ''व्यवस्था'' शब्द से उसका क्या अर्थ था? ''कौन सी *व्यवस्था* के कारण से? क्या कर्मों की *व्यवस्था* से? नहीं, वरन विश्वास की *व्यवस्था* के कारण।'' हमने अपने

अध्ययन में आमतौर पर व्यवस्था को देखा है। मुख्य प्रश्न यह रहा है कि पौलुस के कहने का अर्थ मूसा की व्यवस्था था या सामान्य व्यवस्था। परन्तु कई बार उसने इस शब्द का इस्तेमाल गौण अर्थ में किया। (इस पुस्तक में आगे ''व्यवस्था' [*Nomos*] पर एक शब्द अध्ययन'' देखें।) आयत 27 में पौलुस ने सम्भवतया *nomos* का इस्तेमाल ''नियम'' के अर्थ में किया: ''तो घमण्ड करना कहां रहा? उसकी तो जगह भी नहीं। कौन से [नियम] के कारण? क्या कर्मों [से धर्मी ठहराए जाने] के कारण? नहीं, वरन विश्वास [से धर्मी ठहराए जाने] के [नियम] से।''

जो पौलुस ने *नहीं* कहा

रोमियों 3:27, 28 में पौलुस का मुख्य संदेश यह है कि आप के और मेरे पास घमण्ड करने वाली कोई बात नहीं है क्योंकि हमारा उद्धार अपने कामों से नहीं, बल्कि यीशु में विश्वास रखने से हुआ है। एक पुराने गीत के बोल हैं, ''भरोसा एक ही मेरा है वह यीशु का छुटकारा है।''[12] इस सच्चाई को न भूलें। इसे विस्तार देने से पहले हमें यह विचार करने के लिए कि 3:27, 28 में पौलुस ने *क्या* नहीं कहा एक छोटी पगडण्डी पर चलना होगा। उसने *कहा* कि हमारा उद्धार विश्वास से होता है। परन्तु उसने यह नहीं *कहा* कि हमारा उद्धार *केवल* विश्वास से होता है।

आयत 28 ही है जहां प्रसिद्ध सुधारक मार्टिन लूथर (1483–1546) ने बाइबल के अपने जर्मन अनुवाद में यह सिखाने के उद्देश्य से कि व्यक्ति ''*अकेले* विश्वास से'' धर्मी ठहराया जाता है, ''केवल'' शब्द जोड़ दिया।[13] लूथर एक प्रीस्ट था, जिसका कैथोलिक चर्च से मोहभंग हो गया था। ''कर्मों से उद्धार'' के प्रबन्ध के विरुद्ध जिसे वह देखता आया था प्रतिक्रिया करते हुए उसने अतिप्रतिक्रिया करके कामों को ही मिटा देने का प्रयास किया। रोमियों 3:28 में ''केवल'' के जोड़े जाने से यह आयत याकूब 2:24 के विपरीत हो जाती है, परन्तु लूथर ने यह घोषणा करके कि याकूब की पुस्तक बेकार ''पुआल की पत्री'' है,[14] इस समस्या को ''सुलझा दिया।''

यह जानकर कि कितने टीकाकार लूथर के स्पष्ट जुड़ाव का बचाव करते हैं, मुझे आश्चर्य हुआ।[15] मुझे लगता है कि मुझे इस पर हैरानी नहीं होनी चाहिए थी, क्योंकि बहुत देर से ''केवल विश्वास से उद्धार'' एक मुख्य सिद्धांत बन गया था, जिसे ''इवैंजलिस्टिक मसीहियत'' कहा जाता है।

दमनकारी धार्मिक प्रबन्ध की बेड़ियां तोड़ने के लिए हर नॉन कैथोलिक लूथर का देनदार है। लूथर का जर्मन भाषा में बाइबल का अनुवाद करना एक बहुत बड़ी प्राप्ति और बहुत बड़ी सेवा थी, परन्तु मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि ''केवल'' शब्द जोड़कर वह *गलत* कर रहा था। यदि वह यह कहना चाहता कि *उसका* मानना है कि उद्धार केवल विश्वास से होता है, तो यह अलग बात है। यह परमेश्वर की प्रेरणा से दिए वचन में जोड़कर *परमेश्वर* से कहलवाने की कोशिश है।

पहली बात तो यह कि लूथर इसलिए गलत था क्योंकि बाइबल वचन में जोड़े जाने की घोर निंदा करती है (देखें व्यवस्थाविवरण 4:2; नीतिवचन 30:6; प्रकाशितवाक्य 22:18, 19)। दूसरी बात, लूथर इसलिए गलत था, क्योंकि बाइबल में एक बार जोड़ने पर उसे छोड़ने की जगह नहीं रहती। लूथर के श्रद्धालुओं ने बाइबल की किसी भी शर्त को जो *उन्हें* अनावश्यक लगती है ''बेकार'' का नाम देने के अपने प्रयासों में ''अकेला'' या (''केवल'') का इस्तेमाल किया है।

जहां मैं रहता हूं, वहां ''अकेला'' और ''केवल'' शब्दों का इस्तेमाल उद्धार के लिए आवश्यक होने के रूप में बपतिस्मे को निकालने की कोशिश के रूप में किया जाता है। कुछ लोगों के निष्कर्षों के अनुसार यदि पतरस को अनुग्रह के अर्थ की समझ आ गई होती, तो वह पापियों द्वारा यह पूछे जाने पर कि ''हम क्या करें?'' (प्रेरितों 2:37) का उत्तर अलग देता। ''मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले'' (आयत 38) को मानने के बजाय उनका मानना है कि उसे यह कहना चाहिए था, ''उद्धार केवल विश्वास से होता है। केवल यीशु में विश्वास लाओ और परमेश्वर से क्षमा का आनन्द लो।'' उस अवसर पर विचार करें, जब शाऊल/पौलुस ने पूछा था, ''हे प्रभु, मैं क्या करूं?'' (प्रेरितों 22:10)। यदि परमेश्वर की प्रेरणा पाया हुआ प्रचारक हनन्याह लूथर की सलाह लेता तो उसने यह नहीं कहना था, ''उठ और बपतिस्मा ले और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल'' (आयत 16)। इसके बजाय उसने केवल इतना ही आग्रह किया होता, ''यीशु में भरोसा रख।''

जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ने लिखा है:

> रोम की गलती से लड़ते-लड़ते (कि लोग कर्मों से धर्मी ठहराए जाते हैं), लूथर एक और गलती में जा गिरा, क्योंकि मन फिराव भी विश्वास की तरह ही धर्मी ठहराए जाने का एक माध्यम है, और उन दोनों में अपने आप में कोई *खूबी* नहीं है। हमारे धर्मी ठहराए जाने की खूबी का कारण *प्रायश्चित का मसीह का लहू* है और विश्वास, मन फिराव और बपतिस्मा आदि से हम मसीह के लहू तक पहुंचते हैं। हमारी ओर से किए जाने वाले ये काम, धर्मी ठहराने के *योग्य* नहीं बना देते, बल्कि वे मसीह द्वारा ठहराई गई *शर्तें* हैं, जिनसे मेल खाते हुए वह हमें निवेश करता है; यानी हमें धर्मी ठहराता है।[16]

मैं विश्वास से धर्मी ठहराए जाने को मानता हूं। *मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं* कि मेरा उद्धार विश्वास के आधार पर होता है न कि पूर्ण आज्ञापालन के आधार पर। इसके साथ ही मुझे प्रभु द्वारा ठहराई गई किसी भी शर्त पर सवाल उठाने या उसे तुच्छ जानने का अधिकार नहीं है। ऐसा करना विश्वास को दिखाना नहीं बल्कि भरोसे की कमी है।

''मैं कह रहा हूं कि विश्वास से धर्मी ठहराया जाना असहिष्णुता को निकालने वाला होना चाहिए'' (3:29, 30)

पौलुस ने जो कहा

आयत 28 में पौलुस ने ज़ोर दिया कि ''मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना *विश्वास के द्वारा* धर्मी ठहरता है।'' यहूदियों का मानना था कि मूसा की व्यवस्था उनके पास होना उन्हें विशेष लोग बना देता है और उन्होंने इस विश्वास को बड़े ज़ोर से पकडा हुआ था कि यह उन्हें अन्यजातियों से बेहतर (बहुत बेहतर) बना देता है।

1:18-3:20 में पौलुस ने यह दिखाते हुए कि यहूदी और अन्यजाति दोनों ने वही पाप किए थे, उन्हें एक तराज़ू में तौल दिया। अब उसने यह ध्यान दिलाते हुए कि उनका एक ही पिता था, दोनों

को बराबर कर दिया। उसने कहा, ''क्या परमेश्वर केवल यहूदियों का ही है'' (3:29क)। कुछ यहूदी ऐसा ही सोचते थे। पौलुस ने आगे कहा, ''क्या अन्यजातियों का नहीं है?'' (आयत 29ख)। अधिकतर यहूदियों ने हिचकिचाते हुए उत्तर दिया होगा, ''हां।'' यदि उन पर दबाव डाला जाता तो उन्होंने मान लेना था कि परमेश्वर अन्यजातियों का सृष्टिकर्त्ता, हाकिम और न्यायी है (देखें भजन संहिता 96:10; यिर्मयाह 10:7), परन्तु उन्हें यह मानना कठिन लगा कि वह अन्यजातियों का *उद्धारकर्त्ता* है।

पौलुस ने अपने ही प्रश्न का उत्तर दिया: ''हां, अन्यजातियों का भी [परमेश्वर है] क्योंकि एक ही परमेश्वर है ...'' (रोमियों 3:29ग, 30)। पौलुस का निष्कर्ष यहूदी धर्म के सार एकेश्वरवाद की सच्चाई पर[17] आधारित था, जिससे हर यहूदी परिचित था। हर दिन धार्मिक यहूदी शेमा का पाठ करते थे,[18] जिसका आरम्भ ''हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है!''; (व्यवस्थाविवरण 6:4) से होता था। यदि केवल एक ही परमेश्वर है तो वह यहूदियों और अन्यजातियों दोनों का परमेश्वर होना चाहिए। यदि अन्यजातियों का अलग परमेश्वर था तो फिर *दो* परमेश्वर होने चाहिए थे, जो किसी भी यहूदी को स्वीकार्य नहीं था।

यदि परमेश्वर अन्यजातियों का परमेश्वर भी था, तो केवल यही स्वाभाविक था कि वे भी मनुष्यजाति के छुटकारे के लिए परमेश्वर की योजना में शामिल हों। पौलुस के आरम्भिक वाक्य में, उसने कहा कि ''सुसमाचार ... हर एक विश्वास करने वाले के लिए, पहले तो यहूदी *फिर यूनानी [अन्यजाति] के लिए,* उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है'' (रोमियों 1:16)। अब उसने इसी सच्चाई पर फिर से ज़ोर दिया। यहां उसका यह वाक्य अपनी पूर्णता में है: ''हां, अन्यजातियों का भी है क्योंकि एक ही परमेश्वर है, *जो खतना वालों* [यहूदियों] *को विश्वास से और खतनारहितों*[19] [अन्यजातियों] *को भी विश्वास के द्वारा*[20] *धर्मी ठहराएगा*'' (3:29ग, 30)।

एफ. एफ. ब्रूस के अनुसार, ''प्राचीन जगत में यहूदियों और अन्यजातियों की बीच की दरार सबसे बड़ी खाई थी''[21] परन्तु यीशु के क्रूस के द्वारा उस खाई को मिटा दिया गया था। इफिसुस के मसीही लोगों को पौलुस ने बताया:

> [मसीह] हमारा मेल है, जिस ने दोनों [यहूदियों और अन्यजातियों] को एक कर लिया: और अलग करने वाली दीवार [मूसा की व्यवस्था] को जो बीच में थी, ढहा दिया। और अपने शरीर में बैर अर्थात उस व्यवस्था को जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे और क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए (इफिसियों 2:14-16)।

यह कहने के लिए ब्रूस और आगे बढ़ गया कि ''पौलुस का तर्क [रोमियों 3:29, 30 में] हमारे समकालीन विभाजनों के प्रकाश में भी उतना ही मान्य है, जितना उसके अपने समय के लोगों में; पूर्व और पश्चिम, काले और गोरे में कोई भेद नहीं है, क्योंकि सब को परमेश्वर के नि:शुल्क अनुग्रह की आवश्यकता एक समान है और सब को उसका अनुग्रह एक जैसी शर्तों के आधार पर ही मिल सकता है।''[22] मसीहियत अलग-अलग जातियों अलग-अलग सामाजिक स्थिति, अलग अलग आर्थिक परिस्थितियों, अलग-अलग पढ़ाई और अलग-अलग बिरादरियों,

पुरुषों, स्त्रियों, लड़कों और लड़कियों को इकट्ठे लाने की अपनी क्षमता में बेजोड़ है। क्योंकि आराधना और महिमा के लिए इकट्ठा हुए सब लोग उसकी महिमा करते हैं, जिन्हें उसने अपने अनुग्रह से उद्धार दिया है। टॉम राइट ने कहा कि रोमियों 3:29, 30 का संदेश ''आसान है: वे सब जो यीशु में विश्वास रखते हैं एक ही परिवार के हैं और उन्हें एक ही मेज़ से खाना चाहिए।''[23] एक ही परिवार के होने पर हाफोर्ड लकॉक की टिप्पणियों पर विचार करें:

> यदि हमारे सब काम लोगों के साथ एक साथ एक परिवार के रूप में नाकाम रहते हैं तो वास्तव में हम एक परमेश्वर पर विश्वास नहीं रखते। ... पौलुस कहता है कि यहूदी या अन्यजाति परमेश्वर हर किसी के साथ उसके विश्वास के आधार पर एक जैसा व्यवहार करता है। परमेश्वर देखता नहीं है। उसका पसंदीदा व्यक्ति कोई नहीं है वह लीपापोती को तुच्छ मानता है जो कुछ लोगों को छोटा करता है। यदि हम कुछ लोगों को अछूत मानें तो हम एक ही परमेश्वर में विश्वास करने वाले नहीं हैं। यदि हम अपने कामों से मनुष्यजाति की एकता का इनकार करते हैं तो हम वास्तव में बहुदेववादी हैं।[24]

पौलुस ने जो *नहीं* कहा

शायद मुझे उस पर जो रोमियों 3:29, 30 में पौलुस ने *नहीं* कहा, उस पर एक संक्षिप्त टिप्पणी जोड़नी चाहिए कि उसने यह नहीं कहा कि यहूदी लोग यहूदी नहीं रहे या अन्यजाति लोग अन्यजाति नहीं रहे। इसके बजाय उसने ज़ोर देकर कहा कि उद्धार के सम्बन्ध में ऐसे अन्तर अनावश्यक हैं। सबका उद्धार एक ही आधार पर होता है।

मैंने यह इसलिए कहा क्योंकि कुछ लोग इस बात से संतुष्ट हो जाते हैं कि रोमियों 3:29, 30 और गलातियों 3:26-28 जैसे वचन यह सिखाते हैं कि क्रूस ने सब अन्तर मिटा दिए हैं। विशेषकर वे पति के अपनी पत्नी का सिर होने की नये नियम की शिक्षा को नकारने की कोशिश करते हैं (देखें इफिसियों 5:23) और नया नियम सार्वजनिक आराधना सभाओं सहित (देखें 1 तीमुथियुस 2:8; 1 कुरिन्थियों 14:34) कलीसिया में पुरुष के नेतृत्व की बात पर ज़ोर देता है (1 तीमुथियुस 3:2)। पुरुषों और स्त्रियों दोनों का उद्धार एक ही तरह से होता है और सब परमेश्वर की दृष्टि में समान हैं। यह यह कहने से कोसों दूर है कि वे पुरुष और स्त्री नहीं रहे और पुरुषों और स्त्रियों के विषय में परमेश्वर द्वारा दिए गए बाइबल के निर्देशों के अधीन नहीं हैं।

''मैं यह *नहीं* कह रहा कि विश्वास से उद्धार उस को करने की आवश्यकता खत्म कर देता है, जो परमेश्वर कहता है'' (3:31)

पौलुस ने जो कहा

पौलुस ने कहा था कि ''मनुष्य व्यवस्था के कामों से अलग ही, ... धर्मी ठहरता है'' (रोमियों 3:28)। उसने ज़ोर दिया था कि परमेश्वर यहूदी को (व्यवस्था के साथ) उसी आधार पर बचाएगा, जिस आधार पर अन्यजाति को (बिना व्यवस्था के) (आयतें 29, 30)। ऐसी बातें कहते हुए पौलुस को मालूम था कि उसके आलोचक उस पर ''विरोधाभासी'' होने का आरोप लगा सकते हैं। यह बड़ा शब्द दो यूनानी शब्दों *anti* (''विरुद्ध'') और *nomos* (व्यवस्था) पर आधारित है। एंटीनोमियन

लोग ''कानूनी शर्तों'' या नैतिक बंदिशों को नहीं मानते थे।[25] इसलिए पौलुस ने इस प्रश्न की बात करते हुए कि वह व्यवस्था के महत्व को मानता था या नहीं इस भाग को बन्द कर दिया। उसने यह कहते हुए आरम्भ किया, ''तो क्या हम[26] व्यवस्था को विश्वास के द्वारा व्यर्थ ठहराते हैं ?'' (आयत 31क)।

''व्यर्थ ठहराते'' मिश्रित शब्द (*katargeo*) शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ ''निष्क्रियता को बंद करना'' (*kata* [''नीचे''] के साथ *argos* [''निष्क्रिय'']) है।[27] KJV में ''make void'' है; एक अक्षरश: अनुवाद ''नष्ट करना'' है।[28] *Nomos* से पहले कोई निश्चित उप-पद नहीं है, परन्तु पौलुस विशेषकर यहूदी आपत्तियों का अनुमान लगा रहा था। इसलिए हम पहले इस पर विचार करते हैं कि उस दृष्टिकोण से उसका प्रश्न कैसे देखा गया था: ''क्या विश्वास से धर्मी ठहराए जाने की शिक्षा मूसा की व्यवस्था को व्यर्थ कर देती है ?''

एक बार फिर पौलुस ने स्तब्ध करने के सुर में उत्तर दिया: ''कदापि नहीं !'' (आयत 31ख)। उसने कहा, ''वरन व्यवस्था को स्थिर करते हैं'' (आयत 31ग)। ''स्थिर करते हैं'' *histemi* से लिया गया है, जिसका अर्थ ''खड़े बनना।''[29] *nomos* से पहले कोई निश्चित उप-पद नहीं है तौभी यहां पर फोकस मूसा की व्यवस्था पर भी था। यहां पौलुस ने इस विचार को विस्तार नहीं दिया, परन्तु अगले अध्यायों में उसने इस पर और बताना था कि व्यवस्था क्या कर सकती थी और क्या नहीं। यह तथ्य कि मसीह आया और हमारे पापों के लिए मरा मूसा की व्यवस्था को इस अर्थ में ''स्थिर करता है'' कि इसने व्यवस्था को *पूरा किया।* गलातियों की पुस्तक में पौलुस ने कहा कि व्यवस्था ''मसीह तक पहुंचाने के लिए हमारी शिक्षक हुई है कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें'' (गलातियों 3:24) और इसने अपना उद्देश्य पूरा किया।

इसके बाद आइए वचन को वैसे ही देखें जैसे लिखा गया है: ''तो क्या हम व्यवस्था को विश्वास के द्वारा व्यर्थ ठहराते हैं ? कदापि नहीं ! वरन व्यवस्था को स्थिर करते हैं।'' इसमें एक महत्वपूर्ण संदेश लगता है: क्या इस तथ्य का कि हमारा उद्धार कर्मों के बजाय विश्वास से होता है, अर्थ यह है कि अब हमें परमेश्वर की व्यवस्था को मानने की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है ?[30] क्या इसका अर्थ यह है कि हम जैसे चाहें वैसे जीने के लिए स्वतन्त्र हैं, कि भक्तिपूर्ण जीवन जीना आवश्यक नहीं है, पौलुस का उत्तर बिल्कुल स्पष्ट है कि ''कदापि नहीं !'' (NKJV)। उसने कहा, ''वरन, व्यवस्था को स्थिर करते हैं।'' यानी, हम परमेश्वर की व्यवस्था की वैधता को स्थापित करते हैं कि परमेश्वर की व्यवस्था आज भी है और हम से आज भी उनकी आज्ञा मानने की उम्मीद की जाती है।

पौलुस ने यह इतने ज़ोरदार ढंग से कहा कि हमारा उद्धार विश्वास के आधार पर होता है, न कि व्यवस्था को मानने के आधार पर, तो विश्वास से धर्मी ठहराए जाने की शिक्षा ''व्यवस्था को स्थिर'' कैसे करती है ? पहली बात तो यह कि उद्धार दिलाने वाला विश्वास *आज्ञाकारी* विश्वास है। विश्वासी को परमेश्वर की व्यवस्था की बात मानने की चिन्ता है जबकि अविश्वासी को नहीं। दूसरी बात विश्वासी इस बात को समझता है कि परमेश्वर ने उसके लिए क्या किया है, उसके लिए जो परमेश्वर ने किया है *धन्यवाद देता है,* और जिस लिए वह परमेश्वर की व्यवस्था को मानने की *इच्छा करता* है। ''हम इसलिए प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हमसे प्रेम किया'' (1 यूहन्ना 4:19); ''क्योंकि परमेश्वर से प्रेम रखना यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें''

(1 यूहन्ना 5:3क)।

मैक्गुइगन ने यह बात ध्यान दिलाई कि व्यवस्था का सम्मान करने वाले लोग वास्तव में वे हैं जो विश्वास से उद्धार पाने में विश्वास रखते हैं, न कि वे जो व्यवस्था को मानने के आधार पर उद्धार पाने में विश्वास रखते हैं। उसने उस व्यक्ति में जिसे उसने ''विधिज्ञ'' (जो व्यवस्था को मानने के आधार पर उद्धार में विश्वास रखता है) कहा और ''विश्वासी'' में अन्तर किया:

> एक ओर, विधिज्ञ व्यवस्था को आज्ञाकारिता का जीवन देता और सोचता है कि वह व्यवस्था की मांगों को पूरा करेगा। परन्तु मनुष्य का आज्ञापालन अधूरा ही होता है, जो व्यवस्था की भारी पवित्रता को हल्का कर देता है। यह व्यवस्था से उससे कम से संतुष्ट होने का आग्रह करता है जिसकी यह मांग करती है। दूसरी ओर, विश्वासी यह मानता है कि वह जो कुछ भी कर सकता है वह व्यवस्था की शर्तों से कम है। एक अर्थ में वह व्यवस्था से कहता है, ''क्षमा करना, मेरी पूरी कोशिश भी तेरी धार्मिकता और पवित्र मांगों को पूरा करने के नज़दीक भी नहीं जाती। मुझे विकल्प यानी यीशु मसीह को ही बुलाना पड़ेगा।'' विधिज्ञ नहीं, बल्कि विश्वासी ही है जो व्यवस्था को ऊंची शुद्धता के पैडल पर रखता है।

पौलुस ने जो *नहीं* कहा

3:31 पर टिप्पणियों से और कुछ अनुवादों से यह स्पष्ट है कि कई लोगों का मानना है कि यह आयत सिखाती है कि कम से कम यहूदियों के लिए और सम्भवतया सबके लिए मूसा की व्यवस्था आज भी लागू है। यह भी स्पष्ट है कि बहुत से लेखकों ने पुरानी वाचा (पुराना नियम) और नई वाचा (नया नियम) के बीच के सम्बन्ध को समझने की कभी कोशिश नहीं की। अपनी खोज में मैंने कई बार यह सुझाव पाया है कि परमेश्वर ने पुराने नियम की ''औपचारिक व्यवस्था'' को निकाल दिया,परन्तु ''नैतिक नियम'' को नहीं। यदि यह सच होता तो यह कहने के योग्य किसने होना था कि ''औपचारिक'' क्या है और ''नैतिक'' क्या ?

रोमी लोगों को लिखते हुए पौलुस ने व्यवस्था के निकाले जाने की बात पर केवल परोक्ष रूप से बात की।[32] उसका उद्देश्य यह दिखाना था कि हमारा उद्धार व्यवस्था को मानने से नहीं होता चाहे यह पुराने नियम की व्यवस्था हो, नये नियम की आज्ञाएं या व्यवस्था का कोई और प्रबन्ध हो। अन्य शब्दों में *कौन सी* व्यवस्था मुख्य बात नहीं थी जो उसने कहनी थी। परन्तु अन्य अवसरों पर उसने इस विषय पर अवश्य लिखा। इफिसियों 2:14, 15क में पौलुस ने कहा कि मसीह ने ''अलग करने वाली दीवार को जो [यहूदियों और अन्यजातियों के] बीच में थी, ढा दिया, और अपने शरीर में वैर अर्थात वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं [यानी मूसा की व्यवस्था], मिटा दिया।'' गलातियों 3:24 कहता है कि व्यवस्था ''मसीह तक पहुंचाने के लिए हमारी शिक्षक हुई है कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें''; और आयत 25 यह जोड़ती है कि ''परन्तु जब वह विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक [मूसा की व्यवस्था] के अधीन न रहे।'' जब झूठे शिक्षकों ने मसीही लोगों पर खतना जैसे पुराने नियम की व्यवस्थाओं को थोपने की कोशिश की, तो पौलुस ने ज़ोरदार और निर्णायक ढंग से प्रतिक्रिया दी (देखें प्रेरितों 15:1, 2ग; गलातियों 5:2)।

इस मसले पर हम और विस्तार से बाद में चर्चा करेंगे। अब के लिए हम इतना ही कह सकते हैं कि 3:31 में पौलुस ने यह *नहीं* कहा कि मूसा की व्यवस्था आज भी लागू है।

सारांश

रोमियों 3:27-31 विश्वास से धर्मी ठहराए जाने के विषय के पौलुस के परिचय (3:21-26) और अगले अध्याय में इस विषय पर उसकी चर्चा के बीच पुल का काम करता है। अध्याय 4 में पौलुस ने फिर से इस तथ्य को स्पर्श किया कि घमण्ड करना खत्म कर दिया गया है (3:27 की तुलना 4:2 से करें) और यह कि यहूदी और अन्यजाति सब को एक ही आधार पर धर्मी ठहराया जाता है (3:29 की तुलना 4:11, 12, 16 से करें)।

रोमियों 3:27-31 छोड़ने से पहले मैं आपको याद दिला दूं कि पौलुस के लिए आवश्यक था कि लोग उसे गलत न समझें। वह विश्वास से धर्मी ठहराए जाने की शिक्षा के तीन नियम अपने पाठकों को बताना चाहता था।

- यह पापियों को नम्र बना देता है और घमण्ड करने को खत्म का देता है।
- यह विश्वासियों को मिला देता है और मतभेद को हतोत्साहित करता है।
- यह व्यवस्था को स्थापित करता है और आज्ञापालन को प्रोत्साहित करता है।[33]

विश्वास से धर्मी ठहराए जाने पर पौलुस की शिक्षा का अध्ययन करते हुए मुझे उम्मीद है कि आप इसकी व्यक्तिगत प्रासंगिकता बना रहे हैं। अब तक आपको स्पष्ट हो जाना चाहिए कि यदि आप खोए हुए हैं, तो यह परमेश्वर की गलती नहीं है। आपका उद्धार सुनिश्चित करने के लिए वह जो कुछ भी कर सकता था उसने वह सब किया। उसने केवल अपने पुत्र को ही नहीं भेजा, बल्कि हमें वह वचन भी दिया है जो हमें मसीह के बलिदान के बारे में और उससे लाभ पाने का ढंग बताता है। बाकी उसने आप पर छोड़ दिया है। यदि अभी तक आपने यीशु में भरोसा रखकर मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38 में बताए अनुसार उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया है, तो मेरी प्रार्थना है कि आज ही आप उसकी इच्छा को मान लें।

टिप्पणियां

[1]*अमेरिकन हेरीटेज डिक्शनरी,* चौथा संस्करण (2002), s.v. "boast." [2]विलियम हैंड्रिक्सन, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ पॉल 'स एपिस्टल टू द रोमन्स,* न्यू टैस्टामैंट कंमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1981), 135 से लिया गया। [3]ये अभिव्यक्तियां जॉन मैकार्थर, *रोमन्स 1-8,* द मैकार्थर न्यू टैस्टामैंट कंमैट्री (शिकागो: मूडी प्रैस, 1991), 220 से ली गई हैं। [4]जिम मैक्गुइगन, *द बुक आफ रोमन्स* (लब्बॉक, टैक्सस: मोन्टैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 137 से लिया गया। [5]हैंड्रिक्सन 135 से लिया गया। [6]यह उदाहरण वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 524 सहित कई पुस्तकों में पाया जाता है। [7]पौलुस ने परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए सभी वक्ताओं और लेखकों की बात करने के लिए यहां ''हम'' शब्द का इस्तेमाल किया हो सकता है या ''हम'' का इस्तेमाल 3:8 की तरह उसने ''सम्पादकीय'' अर्थ में केवल अपने लिए किया होगा। [8]''पहुंचते हैं'' का अनुवाद *logizomai* से किया गया है जिसका अर्थ ''गिनती करना, हिसाब लगाना'' (*दि एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* [लंदन: सेमुएल बैग्स्टर एण्ड सन्स, 1971], 249)। अध्याय 4 में यह एक मुख्य शब्द है; इस पर चर्चा हम उसी संदर्भ में करेंगे। [9]वही, 440. [10]*द इंटरलीनियर ग्रीक-इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट: दि नेसले*

ग्रीक टैक्सट विद ए न्यू लिटरल इंग्लिश ट्रांसलेशन बाय एल्फ्रेड मार्शल (लंदन: सेमुएल बैग्स्टर एण्ड सन्स, 1958), 612.

[11]डेविड एफ. बर्गस, संक. *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ सरमन्स इलस्ट्रेशन* (सेंट लुइस: कन्कोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1988), 211. [12]एडवर्ड मोट, ''माई होप इज़ बिल्ट ऑन नथिंग लैस'' (का अनुवाद-अनुवादक), *सांग्स आफ ़फ़ेथ एंड प्रेज़,* संपा. और संक. आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994). [13]जॉन डेविड स्टुअर्ट, *ए स्टडी आफ मेजर रिलिजियस बिलिफ़स इन अमेरिका,* द लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1962), 32. [14]यह बात 1522 में लिखे नये नियम के लूथर के अनुवाद की भूमिका में उसकी बताई जाती है। [15]उनमें से बहुतों ने देखा कि औरों ने पहले वचन में ''अकेला'' (या इससे मिलता जुलता शब्द) जोड़ा। मैंने अपनी बेटियों को सिखाया कि यह तथ्य कि किसी दूसरे ने ऐसा किया है किसी बात को सही नहीं ठहरा देता। [16]जे. डब्लयू. मैकग्रवे एंड फिलिप वाई. पैंडलटन, *थसलोनियंस, कोरंथियंस गलेशियंस एंड रोमन्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग, तीथि नहीं), 323. [17]"Monotheism" ''या एकेश्वरवाद'' उस इस्तेमाल के लिए किया जाता है कि केवल एक ही परमेश्वर है: ''केवल'' या (एक) (*mono*) + ''परमेश्वर'' (*theos*)। [18]"Shema" ''भय'' के लिए इब्रानी शब्द है जिससे व्यवस्थाविवरण 6:4 आरम्भ होता है। [19]मूल धर्मशास्त्र में मूलतया ''खतना'' और ''अखतना'' है (देखें KJV)। [20]वचन कहता है कि यहूदी लोग ''विश्वास से [*ek*]'' धर्मी ठहराए जाते हैं जबकि अन्यजाति लोग ''विश्वास के द्वारा [*dia*]'' धर्मी ठहराए जाते हैं। कइयों ने इस तथ्य में महत्व ढूंढ़ने का प्रयास किया कि दो अलग-अलग यूनानी उपसर्गों का इस्तेमाल किया गया है, परन्तु पौलुस सम्भवतया विभिन्नता के लिए पर्यायवाची शब्दों का इस्तेमाल कर रहा था (जैसा अधिकतर लेखक करते हैं)।

[21]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 95. [22]वही, 95-96. [23]एन. टॉम राईट, *न्यू टास्क ़फ़ार ए रिन्यूड चर्च* (लंदन: होड्ड एंड स्टाउटन, 1992), 168. [24]हाफोर्ड ई. लकॉक, *प्रीचिंग वैल्यूस इन द एपिस्टल आफ पॉल,* 1, *रोमन्स एंड फस्ट कोरंथियंस* न्यू यार्क: हार्पर एंड ब्रदर्ज़, 1959), 37-38 से लिया गया। [25]यूहन्ना की पत्रियों में, एक गलती जिसे वह दिखा रहा था वह एंटिनोमियनवाद की थी (देखें 1 यूहन्ना 3:4, 10; 5:2, 3). [26]3:8 और 3:28 की तरह पौलुस ''हम'' का इस्तेमाल बहुवचन या ''सम्पादकीय'' अर्थ में कर रहा होगा। [27]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि. *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 3. [28]*द इंटरलीनिर ग्रीक-इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट,* 612. [29]वाईन, 207. [30]बार्कले के अनुवाद में ''तो क्या हम विश्वास के द्वारा व्यवस्था को पूरी तरह से रद्द कर देते हैं?'' (विलियम बार्कले, *द लेटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ [फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1975], 60).

[31]मैक्गुइगन, 139 से लिया गया। [32]यद्यपि उसने सीधे इस विषय पर बात नहीं की, परन्तु उसने इस पर अपने विचारों के मज़बूत संकेत दिए, जैसा कि हम 7:1-6 पर चर्चा में देखेंगे। [33]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोई: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1994), 121.